L.N. MITHILA UNIVERSITY
DARBHANGA (BIHAR)
B.A PART- 01
B.A PAPER- 01
Social Psychology
Psychology (Honours)
TOPIC- Relation with General Psychology.

Dr. Pramod Kumar Sah,
Assistant Professor
Guest Teacher
V.S.J. College, Rajnagar,
MADHUBANI (BIHAR)
pramodkumarsah2018@gmail.com

सामान्य मनोविज्ञान से संबंध- सामाजिक मनोविज्ञान का अन्य अनेक सामाजिक विज्ञानों से महत्वपूर्ण एवं व्यापक संबंध है। सामाजिक मनोविज्ञान जिन महत्वपूर्ण सामाजिक विज्ञानों से संबंधित है उनका विवरण निम्नलिखित प्रकार से है।

सामान्य मनोविज्ञान से संबंध (Relation with General Psychology) सम्भवतः एकान्त में व्यक्ति के रूप में किसी प्राणी का अस्तित्व होता ही नहीं है। व्यक्ति का समूह की सदस्यता, दूसरे व्यक्तियों के साथ उसके अनुभव, उसके भूत एवं वर्तमान के अन्तः वैयक्तिक संबंध एक व्यापक प्रभाव उसकी प्रत्येक मनोवैज्ञानिक क्रिया पर पड़ता ही है। यह प्रभाव कितना ही साधारण और अप्रत्यक्ष क्यों न हो। परिणामस्वरूप प्रत्येक मनुष्य सामाजिक संसार में रहता है और कोई भी मनोवैज्ञानिक आधार उसकी स्थिति कुछ भी क्यों न हो, समाज से परे (asocial) मनुष्य का अध्ययन न तो करता है और न ही कर सकता है। उपर्युक्त कथन से स्पष्ट है कि व्यक्ति के व्यवहार का अध्ययन समाज से अलग करके सम्भव नहीं है। इस कथन से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि समाज मनोविज्ञान का सामान्य मनोविज्ञान से घनिष्ठ संबंध है। सामान्यतः मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की वह शाखा है। जिसमें मनोविज्ञान के प्रारम्भिक और आधारभूत सिद्धान्त होते हैं। जिससे यह स्पष्ट होता है कि सामान्य रूप से व्यक्तियों के विषय क्या सकते हैं? सामान्य मनोविज्ञान के आधारभूत सिद्धान्त व्यक्ति के व्यवहार के वैज्ञानिक अध्ययन से संबंधित होते हैं। क्योंकि व्यक्ति के व्यवहार के

II

वैज्ञानिक अध्ययन व्यक्ति को समाज से अलग स्पष्ट करना सम्भव नहीं है। अतः सामान्य मनोविज्ञान संबंधी अध्ययन किसी न किसी रूप में समाज मनोविज्ञान से संबंधित होते है।
समाज मनोविज्ञान में समाज में व्यक्ति के व्यवहार का अध्ययन सामाजिक दशा में व्यक्ति के व्यवहार का अध्ययन तथा मानवीय अतः क्रियाओं का अध्ययन किया जाता है। इन सभी अध्ययनों में सामान्य मनोविज्ञान के सिद्धान्तों और नियमों आदि का उपयोग आवश्यकतानुसार किया जाता है। सामाजिक मनोविज्ञान और सामान्य मनोविज्ञान के संबंध को स्पष्ट करने के लिए मोटे तौर पर यह भी कहा जा सकता है कि सामाजिक मनोविज्ञान में व्यक्ति के सामाजिक और सामूहिक व्यवहार का अध्ययन किया जाता है तथा सामान्य मनोविज्ञान में व्यक्ति के व्यवहार का वैज्ञानिक अध्ययन किया जाता है। चूँकि दोनों विज्ञानों में व्यक्ति के व्यवहार का किसी न किसी रूप में अध्ययन किया जाता है। अतः दोनों विज्ञान एक दूसरे संबंधित ही नहीं बल्कि एक दूसरे पर पारस्परिक रूप से आश्रित भी है।

समाजशास्त्र से संबंध (Relation with sociology)

समाजशास्त्र और सामाजिक मनोविज्ञान में घनिष्ठ संबंध है। कुछ समय पूर्व तक समाजशास्त्री समाज मनोविज्ञान को समाजशास्त्र की शाखा के रूप में स्वीकार करते थे, उनका कहना यहाँ तक था कि सामाजिक मनोविज्ञान का संबंध जितना समाजशास्त्र से है, उतना संबंध मनोविज्ञान से नहीं। इसी बात का संकेत आरजनेक (1962) के तथ्य कथन से भी मिलता है। Social Psychology is identified as a branch of psychology and a branch of sociology.
सामाजिक मनोविज्ञान के प्रारम्भिक इतिहास का यदि विश्लेषण किया जाये तो यह बात होती है कि सामाजिक मनोविज्ञान के प्रारम्भिक विकास में अनेक समाजशास्त्रियों का समाज मनोविज्ञान के विकास में

योगदान महत्वपूर्ण रहा है। इन समाजशास्त्रियों में कुछ प्रमुख नाम है। लीबान (Le Bon) ने 1985 में भीड़ और उसके व्यवहार पुस्तक लिखी, दुर्खीम (Durkheim) ने यह सिद्धांत दिया कि मानव व्यवहार समूह मन से बहुत अधिक प्रभावित होता है। इसी प्रकार से कूले (C.H Coley) और (G.H Mead) ने आत्मा के विकास पर अपने अपने विचार प्रस्तुत किये हैं। इन समाजशास्त्रियों का योगदान सामाजिक मनोविज्ञान के विकास में बहुत ही महत्वपूर्ण रहा है। प्रारम्भ में मनोविज्ञान विषय सामग्री का समाजशास्त्र से बहुत अधिक संबंध था, यह संबंध आज भी बना हुआ है आज इस विषय पर अधिकतर समाजशास्त्रियों की अपेक्षा मनोवैज्ञानिकों का है। क्योंकि अधिकांश बाद के व्यापक मनोवैज्ञानिकों ने नाम किये हैं। इनकी होते हुए भी योगदानों की दृष्टि से मनोवैज्ञानिक समाजशास्त्री से ऊपर है।

सामाजिक मनोविज्ञान और समाजशास्त्र के संबंध को स्पष्ट करने के लिए यह आवश्यक है कि समाजशास्त्र की परिभाषा को उपयोग किया जाये, समाजशास्त्र को सामाजिक संरचना सामाजिक प्रक्रियाओं तथा व्यक्तियों के मध्य संबंधों व अन्तः क्रियाओं का एक सामान्य विज्ञान है।

वास्तविकता यह है कि समाजशास्त्र सामाजिक मनोविज्ञान को उसके अध्ययन हेतु सामाजिक परिस्थितियों से अवगत कराता है। इन्हीं सामाजिक परिस्थितियों में समाज मनोविज्ञान के व्यवहारों का अध्ययन किया जाता है। अतः यह कहा जा सकता है कि सामाजिक मनोविज्ञान समाजशास्त्र से घनिष्ठ रूप से संबंधित है। ब्रीजेकर ने लिखा है। सामाजिक मनोविज्ञान इस तथ्य को स्वीकार करता है कि मानवीय प्रकृति एवं व्यवहार की एक संतोषप्रद व्याख्या करने के लिए हमें समाज की संरचना संगठन तथा संस्कृति को समझना चाहिए जिससे व्यक्ति संबंधित होता है।

सामाजिक मनोविज्ञान और समाजशास्त्र में जितना संबंध है उतना शायद कहीं उससे अधिक है।

Scanned with CamScanner

14

प्रथम तो दोनों की विषय सामग्री एक-दूसरे से पृथक: भिन्न है। द्वितीय यह कि दोनों विषयों के दृष्टिकोण में आधारभूत अन्तर है। तृतीय यह है कि दोनों विषय की अध्ययन पद्धतियों में अन्तर है। समाजशास्त्र की अपेक्षा सामाजिक मनोविज्ञान की पद्धतियाँ अधिक मनोवैज्ञानिक है। आजकल सामाजिक मनोविज्ञान में प्रयोगात्मक विधि का जितना अधिक उपयोग किया जा रहा है, उसकी तुलना में समाजशास्त्र में नगण्य है। (मानवशास्त्र से संबंध)

(Relation with Anthropology)

सामाजिक मनोविज्ञान और मानवशास्त्र का एक-दूसरे से घनिष्ठ सम्बन्धित है कि दोनों का संबंध मानव से है। और और पर मानवशास्त्र की दो शाखाएँ है। प्रथम शाखा शारीरिक मानवशास्त्र है और द्वितीय शाखा सांस्कृतिक मानवशास्त्र है। शारीरिक मानवशास्त्र में वंशानुक्रम और प्रजातीय भेदों जैसे प्रश्नों का अध्ययन किया जाता है। यह प्रश्न मानव व्यवहार के प्रमुख निर्धारकों में से है। अतः शारीरिक मानवशास्त्र से संबन्धित ज्ञान का उपयोग सामाजिक मनोवैज्ञानिकों के लिए लाभदायक है। मानवशास्त्र की द्वितीय शाखा सांस्कृतिक मानवशास्त्र में मानव संस्कृतियों की उत्पत्ति, इतिहास और उसके उद्भव-विकास विकास और प्रत्येक स्थान और काल में मानव संस्कृतियों की संरचना क्रियाशीलता का अध्ययन किया जाता है।

Dr. Pramod Kumar Sahu.
Date - 21/09/2020.
Sub - Psychology.